पञ्चाक्षरमन्त्र का जप एवं पुरश्चरण

पञ्चाक्षरमन्त्र (**नमः शिवाय**) से पहले ॐकार जोड़ देने से यह षडक्षर मन्त्र कहलाने लगता है। यह षडक्षर होते हुए भी पञ्चाक्षर नाम से ही प्रसिद्ध है। एक बार देवी भगवान् शिव से पूछती हैं– "दुर्जय, दुर्लङ्घ्य एवं कलुषित कलिकाल में जब सारा संसार धर्म से विमुख हो पापमय अधंकार से आच्छादित हो जायगा, वर्ण और आश्रम संबंधी आचार नष्ट हो जायँगे, धर्मसंकट उपस्थित हो जायगा, सबका अधिकार संदिग्ध, अनिश्चित और विपरीत हो जायगा, उस समय उपदेश की प्रणाली नष्ट हो जायगी और गुरु–शिष्य की परम्परा भी जाती रहेगी, ऐसी परिस्थिति में आपके भक्त किस उपाय से मुक्त हो सकते हैं?"

महादेवजी उत्तर देते हैं–'कलिकाल के समय मेरी परम मनोरम पञ्चाक्षरी विद्या का आश्रय ले भक्ति से भावितचित्त होकर संसारबन्धन से व्यक्ति, मुक्त हो सकेंगे। जो मानसिक, वाचिक और शारीरिक दोषों से दूषित, कृतघ्न, निर्दय, छली, लोभी, और कुटिल चित्त हैं, वे मनुष्य भी यदि मुझमें मन लगाकर मेरी पञ्चाक्षरी विद्या का जप करेंगे तो वे मुक्त हो जायँगे। भूतल पर पतित हुआ भक्त भी इस पञ्चाक्षरी विद्या के द्वारा बन्धनमुक्त हो जाता हैं।'

आश्रित्य परमां विद्यां हृद्यां पंचाक्षरीं मम।
भक्त्या च भावितात्मनो मुच्यंते कलिजा नराः।।
मनोवाक्कायजैर्दोषैर्वक्तुं स्मर्तुमगोचरैः।
दूषितानां कृतघ्नानां निंदकानां छलात्मनाम्।।
लुब्धानां वक्रमनसामपि मत्प्रवणात्मनाम्।
मम पंचाक्षरी विद्या संसारभयतारिणी।।

(शिवपुराण, वायवीयसंहिता, उत्तरखण्ड 13/4–6)

आदि में **'नमः'** पद से युक्त **'शिवाय'**–ये तीन अक्षर जिसकी जिह्वा के अग्रभाग में विद्यमान हैं, उसका जीवन सफल हो गया। पञ्चाक्षर–मन्त्र के जप में लगा हुआ पुरुष यदि पण्डित, मूर्ख, अन्त्यज अथवा अधम भी हो तो वह पापपञ्जर से मुक्त हो जाता है।

नमस्कारादिसंयुक्तं शिवायेत्यक्षरत्रयम्।
जिह्वाग्रेवर्तते यस्य सफलं तस्य जीवितम्।।
अंत्यजो वाधमो वापिमूर्खो वा पंडितोऽपि वा।।
पंचाक्षरजपे निष्ठोमुच्यते पापपंजरात्।।

(शिवपुराण, वायवीयसंहिता, उत्तरखण्ड 12/36–37)

भगवान् शिव को प्रसन्न करने हेतु ऋषियों ने ब्रह्माजी से पञ्चाक्षर-मन्त्र का ज्ञान प्राप्त कर मूजवान् पर्वत पर एक हजार दिव्य वर्षोंतक तपस्या की। फलस्वरूप ऋषियों की भक्ति देखकर भगवान् शिव ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन देकर पञ्चाक्षर-मन्त्र के ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक, षडंगन्यास, दिग्बन्ध और विनियोग-इन सब बातों का पूर्णरूप से ज्ञान करवाया।

इस मन्त्र की विशेषता यह है कि चलते-फिरते, खड़े होते अथवा स्वेच्छानुसार कर्म करते हुए, पवित्र या अपवित्र पुरुष के जप करने पर भी यह निष्फल नहीं होता। अन्त्यज, मूर्ख, मूढ़, पतित, मर्यादारहित और नीच के लिये भी यह मन्त्र निष्फल नहीं होता। किसी भी अवस्था में पड़ा हुआ मनुष्य यदि भगवान् शिव में उत्तम भक्ति-भाव रखता है, तो उसके लिये यह मन्त्र निःसन्देह सिद्ध होगा, किन्तु दूसरे किसी के लिये वह सिद्ध नहीं हो सकता। इस मन्त्र के लिये लग्न, तिथि, वार और योग आदि का अधिक विचार अपेक्षित नहीं है। यह मन्त्र कभी सुप्त नहीं होता, सदा जाग्रत ही रहता है। यह महामन्त्र कभी किसी का शत्रु नहीं होता। यह चाहे सिद्ध गुरु के उपदेश से प्राप्त हो अथवा असिद्ध गुरु से अथवा केवल परम्परा से प्राप्त हो, अगर कोई भगवान् शिव में, मन्त्र में तथा गुरु में अतिशय श्रद्धा रखनेवाला है तो उसको मिला हुआ मन्त्र अवश्य सिद्ध होगा। (शिवपुराण, वायवीयसंहिता, उत्तरखण्ड 14/63-71)

गच्छतस्तिष्ठतो वापि स्वेच्छया कर्म कुर्वतः।
अशुचेर्वा शुचेर्वापि मन्त्रोऽयन्न च निष्फलः।।
अन्त्यजस्यापि मूर्खस्य मूढस्य पतितस्य च।
निर्मर्यादस्य नीचस्य मंत्रोऽयं न च निष्फलः।।
सर्वावस्थां गतस्यापि मयि भक्तिमतः परम्।
सिध्यत्येव न संदेहो नापरस्य तु कस्यचित्।।
.....।
.....।।

यद्यपि पञ्चाक्षरमन्त्र सभी लोगों के लिये उपयोगी है तथापि जिसने गुरु से दीक्षा नहीं ली है उसकी अपेक्षा दीक्षा लेनेवाला पुरुष करोड़ गुना अधिक माना गया है। अतः जहाँतक संभव हो दीक्षा लेकर ही मन्त्र का अनुष्ठान करे। शिव के पञ्चाक्षर मन्त्र में सभी का अधिकार है। इसीलिये इसे सर्वश्रेष्ठ मन्त्र माना गया है।

किमत्र बहुनोक्तेन भक्तास्सर्वेधिकारिणः।
मम पंचाक्षरे मंत्रेतस्माच्छ्रेष्ठतरो हि सः।।

(शिवपुराण, वायवीयसंहिता, उत्तरखण्ड 13/20)

जैसा ऊपर कहा जा चुका है, शिव आराधन या मन्त्रजप में भक्ति या श्रद्धा ही फलदायी होती है। अत: बिना श्रद्धाभक्ति के किया हुआ जप-पूजा व्यर्थ होता है। उससे सिद्धि प्राप्त नहीं होती। अत: मन्त्रजप को श्रद्धा एवं भक्ति से करना चाहिये। शास्त्रीय तरीके से उत्तम रूप से सभी अंगों के साथ किया हुआ जप भी निरर्थक हो जायगा अगर उसे भक्तिपूर्वक नहीं किया गया। कहा गया है कि शिव के प्रति भक्तिहीन पुरुष यदि अपना सर्वस्व भी दे डाले तो उससे वह शिवाराधन के फल का भागी नहीं होता; क्योंकि आराधना में भक्ति ही कारण है।

स्र्वस्वमपि यो दद्याच्छिवे भक्तिविवर्जित:।
न तेन फलभाक् स स्याद् भक्तिरेवात्र कारणम्।

(शिवपुराण, वायवीयसंहिता, उत्तरखण्ड 25/52)

अत: पहले के अध्यायों में बताये गये जप के सभी अंगों या चरणों को यदि हम नहीं पूरा कर सकते तो इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं। जो-जो अंग हो सकें उसे पूरी निष्ठा के साथ करें। यहाँ पर हम संक्षिप्तरूप से पञ्चाक्षरमन्त्र के जप की विधि का निरूपण करेंगे।

जपविधि

प्रात: ब्राह्ममुहूर्त में नित्यकर्म से निवृत्त होकर शुद्ध जल से स्नान करना चाहिये और शुद्ध एवं उपासना के लिये उपयुक्त वस्त्र पहनकर पूर्व या उत्तर को मुख करके कुशादि के उपयुक्त आसन पर बैठ जाना चाहिये। बैठने के लिये पद्मासन, स्वस्तिकासन या सुखासन आदि किसी भी आसन को अपनाया जा सकता है। बैठने के बाद रुद्राक्ष एवं शास्त्रीय तरीके से भस्म का त्रिपुण्ड्र धारण करे। तदनन्तर '**ॐ केशवाय नम:**'[1] आदि पूर्वोक्त(जिसका उल्लेख 'मन्त्रजप की विधि एवं तत्संबंधी नियम' वाले अध्याय में हुआ है) आचमन के मंत्रों को बोलते हुए तीन बार आचमन करें।

तदनन्तर दसों दिशाओं में इष्टमन्त्र (**ॐ नम: शिवाय**) के साथ "**ॐ शिवाज्ञया इतोऽन्यत्र व्रजन्तु सर्व एव हि**" मन्त्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़के। तथा निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए आसन के चारों ओर काले तिल, उड़द आदि लेकर बिखेर दें।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता:।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।।

तदनन्तर आसनशुद्धि के लिये निम्नलिखित विनियोग एवं मन्त्र पढ़ें।

---

1. इन मन्त्रों की जगह पूर्वोक्त 'शैव' आचमन के मन्त्रों को भी पढ़ा जा सकता है। शैव आचमन के मन्त्रों के लिये 'शिवमन्त्रों का जप एवं पुरश्चरण' शीर्षकवाला अध्याय देखें।

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः।

कूर्मो देवता। सुतलं छन्दः। आसनपवित्रकरणे विनियोगः

विनियोग वाक्य के बाद नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर आसन पर जल छिड़कें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

इसके पश्चात् मन्त्रानुष्ठान के अधिकार के लिये श्रीभैरव से निम्न मन्त्र बोलते हुए आज्ञा प्राप्त करें-

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।

भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां देहि मे प्रभो।।

और मन में भावना करें कि भैरव ने मुझे आज्ञा प्रदान कर दी है। इसके बाद दीपक जलाकर स्थापित करके दीपक को निम्न मन्त्र बोलते हुए नमस्कार करें।

भो दीप! देवस्वरूपस्त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत्।

यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

तदनन्तर देश-काल का कीर्तन करते हुए संकल्प करें। संकल्प का एक रूप नीचे दिया जा रहा है।

संकल्प-ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, अद्य ब्रह्मणोऽहिन द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे. .....स्थाने.....नाम संवत्सरे.....ऋतौ.....मासे.....पक्षे.....तिथौ .....दिने प्रातःकाले.....गोत्रः.....(शर्मा, वर्मा, गुप्तः) नामानि ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थम्.....कामना सिद्ध्यर्थम् सदाशिव देवता प्रीतये पञ्चाक्षर मन्त्र पुरश्चरणान्तर्गत.....संख्या जपं करिष्ये।*

उपर्युक्त संकल्पवाक्य के खाली स्थानों पर क्रमशः जप जिस स्थान पर किया जा रहा है उसका उल्लेख करें जैसे **'हिमाचल प्रान्तान्तर्गते शिमला जनपदे कण्डाघाट ग्रामे।'** इसके बाद पचांग से संवत्सर, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार का नाम देखकर उसका उच्चारण करें। फिर अपने नाम तथा गोत्र का उच्चारण करें। ब्राह्मण अपने नाम के पश्चात् शर्मा, क्षत्रिय वर्मा, वैश्य गुप्त

* जो लोग पञ्चाक्षर मन्त्र की विस्तार से साधना करना चाहते हों उनके लिये इसके पश्चात् **'तदङ्गत्वेन भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठाऽन्तर्मात्रिकाबहिर्मातृकाश्रीकण्ठादिकलान्यासांश्च करिष्ये'** वाक्य जोड़ने पर संकल्प पूरा हो जाता है। भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा तथा इन सभी प्रकार के न्यासों की विधि इसी पुस्तक में अन्यत्र दी गयी है।

एवं शूद्र दास शब्द का प्रयोग करें। तदनन्तर जिस कामना की सिद्धि के लिये जप किया जा रहा है उसका उल्लेख करें। पुरश्चरण की संख्या पूरी करने के लिये कई दिन जप करना होता है। प्रतिदिन जितना जप करना है उसकी संख्या का भी उल्लेख संकल्प के अन्तिम बिन्दु पर करें।

हाथ में अथवा आचमनी में जल, अक्षत तथा पुष्प लेकर ऊपरवाला संकल्प बोलकर जल को पृथ्वी पर छोड़ दें। इसके बाद मन्त्र के न्यासों को करें।

न्यास से पूर्व बाँयी तरफ गुरु तथा दाहिनी तरफ गणेशजी को क्रमशः '**ॐ गुरुभ्यो नमः**' तथा '**ॐ गणेशाय नमः**' मन्त्र बोलकर नमस्कार करें।

विनियोग – ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। पंक्तिः छन्दः। सदाशिवो देवता। ॐ बीजम्[1]। नमः शक्तिः[2]। शिवायेति कीलकम्[3]। चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे[4] न्यासे विनियोगः।

ऋषि आदि का न्यास –

'**ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि**' मन्त्र बोलकर सिर में न्यास करें। अर्थात् तत्वमुद्रा (पाँचों अंगुलियों को मिलाना) से दाहिने हाथ की अंगुलियों से सिर का स्पर्श करें।

'**ॐ पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे**' मन्त्र बोलकर मुख में न्यास करें।

'**ॐ श्रीसदाशिवदेवतायै नमः हृदये**' मन्त्र बोलकर हृदय में न्यास करें।

'**ॐ बीजाय नमः गुह्ये**' मन्त्र बोलकर गुह्य स्थान में न्यास करें।

'**ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः**' मन्त्र बोलकर पैरों में न्यास करें।

'**ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वांगे**' मन्त्र बोलकर सर्वांग में न्यास करें। सर्वांग में न्यास केवल भावनात्मक होता है।

करन्यास –

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

उपर्युक्त मन्त्रों को बोलते हुए तर्जनी को अगूँठे से तथा अगूँठे से क्रमशः तर्जनी आदि सभी अँगुलियों का स्पर्श करें। अन्तिम मन्त्र पढ़ते हुए दोनों हथेलियों को सामने से तथा पीछे से मिलायें।

1, 2, 3 – शिवपुराण (वायवीयसंहिता उत्तरखण्ड अध्याय 13) के अनुसार विनियोग वाक्य में 'मं बीजम्' 'यं शक्तिः' 'वां कीलकं' कहा गया है। परन्तु मन्त्रमहोदधि (पृ. 609) तथा मन्त्रमहार्णव आदि ग्रन्थों में उपर्युक्त विनियोग ही दिया गया है। पाठक अपनी रुचि के अनुसार दोनों में से किसी का भी प्रयोग कर सकते हैं परन्तु उन्हीं के अनुसार ऋषि आदि का न्यास भी करें।

4 – जिस प्रयोजन के लिये अनुष्ठान किया जा रहा हो एवं जिसका संकल्प में उल्लेख हो चुका हो यहाँ उसका उच्चारण करना चाहिये।

हृदयादिन्यास –

ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिरसे स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचाय हुम्। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्।

उपर्युक्त मन्त्रों को पढ़ते हुए दाहिने हाथ की तत्त्व मुद्रा से क्रमशः हृदय (छाती), शिर तथा शिखास्थान(चोटी की जगह) स्पर्श करें। पाँचवां मन्त्र पढ़कर तत्त्वमुद्रा* से नाक के ठीक ऊपर दोनों भौहों के बीच की जगह का स्पर्श करें। जबकि चौथे मन्त्र को पढ़ते हुए दाहिने हाथ से बाँयें कन्धे का तथा बाँयें से दाहिने कन्धे का स्पर्श करें। अन्तिम मन्त्र को पढ़ते हुए दाहिने हाथ को बाँयी तरफ से सिर के ऊपर से दाहिनी तरफ घुमाते हुए मध्यमा एवं तर्जनी–इन दो अँगुलियों की मदद से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजायें।

पञ्चमूर्तिन्यास –

ॐ नं तत्पुरुषाय नमः इति तर्जन्याम्। ॐ मं अघोराय नमः मध्यमायाम्। ॐ शिं सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकायाम्। ॐ वां वामदेवाय नमः अनामिकायाम्। ॐ यं ईशानाय नमः इत्यङ्गुष्ठे। ॐ नं तत्पुरुषाय नमः मुखे। ॐ मं अघोराय नमः हृदये। ॐ शिं सद्योजाताय नमः पादयोः। ॐ वां वामदेवाय नमः गुह्ये। ॐ यं ईशानाय नमः मूर्ध्नि।

करन्यास एंव हृदयन्यास की उपर्युक्त रीति से ही तत्–तत् अंगों का न्यास करें।

वक्त्रन्यास –

ॐ नं तत्पुरुषाय नमः पूर्ववक्त्रे। ॐ मं अघोराय नमः दक्षिणवक्त्रे। ॐ शिं सद्योजाताय नमः पश्चिमवक्त्रे। ॐ वां वामदेवाय नमः उत्तरवक्त्रे। ॐ यं ईशानाय नमः इत्यूर्ध्ववक्त्रे।

उपर्युक्त न्यास सदाशिव देवता के क्रमशः पाँचों मुखों की भावना द्वारा किया जाता है।

गोलकन्यास – 10 प्रकार के गोलकन्यास निम्न प्रकार से बताये गये हैं।

ॐॐ नमः हृदये। ॐनं नमः वक्त्रे। ॐ मं नमः दक्षांसे ॐशिं नमः वामांसे। ॐ वां नमः दक्षिणोरौ। ॐ यं नमः वामोरौ। इति प्रथम न्यासः।

ॐॐ नमः कण्ठे। ॐनं नमः नाभौ। ॐ मं नमः दक्षिणपार्श्वे। ॐशिं नमः वामपार्श्वे। ॐ वां नमः पृष्ठे। ॐ यं नमः हृदये। इति द्वितीयो न्यासः।

ॐॐ नमः मूर्ध्नि। ॐ नं नमः मुखे। ॐ मं नमः दक्षिण नेत्रे। ॐ शिं नमः वामनेत्रे। ॐवां नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ यं नमः वामनासापुटे। इति तृतीयो न्यासः।

ॐनं नमः हस्ताङ्गुल्यग्रेषु। ॐ मं नमः हस्ताङ्गुलीमूलेषु। ॐ शिं नमः मणिबन्धयोः। ॐ वां नमः कूर्परयोः। ॐ यं नमः बाहुमूलयोः। इति चतुर्थो न्यासः

* पाँचों अंगुलियों को एक साथ इकटठा करना।

ॐ नं नमः पादाङ्गुल्यग्रेषु। ॐ मं नमः पादाङ्गुलीमूलेषु। ॐ शिं नमः गुल्फयोः। ॐ वां नमः जानुनोः। ॐ यं नमः जङ्घयोः। इति पञ्चमोन्यासः।

ॐॐ नमः शिरसि। ॐ नं नमः गुह्ये। ॐ मं नमः हृदये। ॐ शिं नमः कुक्षिद्वये। ॐ वां नमः ऊरुद्वये। ॐ यं नमः पादद्वये। इतिषष्ठो न्यासः।

ॐॐ नमः हृदये। ॐ नं नमो वक्त्राम्बुजे। ॐ मं नमः टङ्के। ॐ शिं नमः मृगे। ॐ वां नमः अभये। ॐ यं नमः वरे। इति सप्तमन्यासः।

ॐॐ नमः वक्त्रे। ॐ नं नमः अंसयोः। ॐ मं नमः हृदये। ॐ शिं नमः पादद्वये। ॐ वां नमः उरुद्वये। ॐ यं नमः जठरे। इति अष्टमन्यासः।

ॐ नं तत्पुरुषाय नमः मूर्ध्नि। ॐ मं अघोराय नमः भाले। ॐ शिं सद्योजाताय नमः उदरे। ॐ वां वामदेवाय नमः अंसयोः। ॐ यं ईशानाय नमः हृदये। इति नवमन्यासः।

ॐ नमोस्तु स्थाणुभूताय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने।
चतुर्मूर्तिवपुःस्थायाभाषिताङ्गाय शम्भवे।।
इति व्यापकं न्यसेत्।

उपर्युक्त न्यासों को करने के बाद इष्ट देवता भगवान् शिव का ध्यान[1] कर आवाहन आदि षोडश उपचारों[2] (अथवा पंचोपचारों अथवा मानसोपचारों) द्वारा पूजा करें। तदनन्तर शिव अथवा देवी के मन्त्रों के जप के लिये संस्कारित[3] रुद्राक्ष की 108 मनकोंवाली माला को लेकर शुद्ध जल से पञ्चाक्षर मन्त्र को पढ़ते हुए प्रोक्षण करे। अर्थात् मन्त्र पढ़ते हुए शुद्ध जल को माला पर छिड़के तथा माला की निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करे।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

प्रार्थना के बाद **'ह्रीं सिद्धयै नमः'** मन्त्र से माला की गंध-पुष्पादि पंचोपचार से पूजा कर माला को दाहिने हाथ में लेकर उसकी निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे।

1- ध्यान के लिये प्रचलित मन्त्र इस प्रकार है-

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

2. 'षोडशोपचारपूजा' की विधि इसी पुस्तक में अन्यत्र लिखी गयी है।

3. मालासंस्कार की विधि इसी पुस्तक में अन्यत्र दी गयी है।

ॐ 'गं' अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिण करे।

जपकाले तु सततं प्रसीद मम सिद्धये।।

इस प्रकार प्रार्थना कर माला को दाहिने हाथ में लेकर वस्त्र से ढक लें अथवा गोमुखी के अन्दर रख लें। तदनन्तर जप से पहले देवी का इस प्रकार ध्यान कर लें–

महासरस्वति चित्ते महालक्ष्मि सदात्मिके।

महाकाल्यानन्दरूपे त्वत्तत्त्वज्ञानसिद्धये।।

अनुसंदध्महे चण्डि वयं त्वां हृदयाम्बुजे।

अब संकल्प के अनुसार इष्ट मन्त्र(पञ्चाक्षर) की निर्धारित संख्या पूरा होनेतक माला को हृदय के सामने रखते हुए विधि–पूर्वक जप करता रहे। जप के अन्त में माला को मस्तक से लगाकर नमस्कार करते हुए माला की निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।

शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा।।

उपर्युक्त प्रार्थना कर **'ह्रीं सिद्धयै नमः'** मन्त्र को पढ़ते हुए माला को पुनः सिर से लगाकर पवित्र एवं गुप्त स्थान पर रख दें; और आचमन करके ऋषि आदि की मानस पूजा करके अथवा उनका स्मरण करके जप के फल को भगवान् शिव के दाहिने हाथ में समर्पित करें। अर्थात् मन्त्र के ऋषि, छन्द, देवता, आदि का स्मरण करते हुए भगवान् शिव का ध्यान करते हुए उनके दाहिने हाथ में जप के फल को समर्पित करने की भावना करे। भावना इस प्रकार करे–पंचाक्षरी विद्या की उपासना हमने श्रीसाम्बसदाशिव की प्रीति के लिये किया है अतः इसका जो कुछ भी फल है उसे हम भगवान् के दाहिने हाथ में समर्पित करते हैं। ऐसी भावना करते हुए समर्पण के निमित्त शिवजी के दाहिने हाथ में जल की धारा दें। दूसरे शब्दों में जलधारा देते–देते इस तरह की भावना करता जाय कि हमने जो पञ्चाक्षरीविद्या का जप किया है उसका फल शिव की संतुष्टि है अतः वह फल, जिसका प्रतिनिधि यहाँ पर जल है, भगवान् शिव के दाहिने हाथ में अर्पण हो।

पुरश्चरण के निमित्त इस पञ्चाक्षर का 24 लाख जप करना पड़ता है। जप की संख्या पूरी हो जाने पर 2.4 लाख आहुति द्वारा हवन करना चाहिये। अर्थात् दशांश हवन करना पड़ता है। खीर में घी एवं मधु मिलाकर आहुति देनी चाहिये। हवन का दशांश दूध मिले जल से तर्पण करना चाहिये तथा तर्पण का दशांश मार्जन करना चाहिये और मार्जन का दशांश ब्राह्मणभोजन कराना

चाहिये।

होम की प्रचलित वैदिक अथवा तान्त्रिक विधि का अनुसरण करना चाहिये। कहीं-कहीं पर जल से ही तर्पण करने का उल्लेख मिलता है। तर्पण एवं मार्जन अथवा अभिषेक के लिये पहले देवता(भगवान् शिव) का आवाहन करना चाहिये। फिर जप्यमन्त्र को बोलकर देवता के नाम के द्वितीया विभक्ति के आगे **'तर्पयामि नमः'** बोलकर तर्पण तथा **'सिञ्चामि'** बोलकर मार्जन करना चाहिये। उदाहरण के लिये **'ॐ नमः शिवाय महादेवं तर्पयामि नमः'** बोलकर तर्पण तथा **'ॐ नमः शिवाय महादेवं अभिषिञ्चामि'** बोलकर मार्जन करें।

एवं होम समाप्याथ तर्पयेद्देवतां जलैः।
आवाह्य तद्दशांशेन तर्पणादभिषेचनम्।।
तर्पयामि नमश्चेति द्वितीयान्तेष्टपूर्वकम्।
मूलान्ते तु पदे देयं सिञ्चामीत्यभिषेचनम्।। (आचारेन्दुः पृ. 137)

पञ्चाक्षर-मन्त्र के 60 करोड़ जप का पुरश्चरण उत्तम, 33 करोड़ का मध्यम और 6 करोड़ का सामान्य कहलाता है। सभी प्रकार के पुरश्चरणों में जितना जप किया जाता है उसका दशांश जप के साथ आहुति दी जाती है। आहुति का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन की दशांश संख्या के ब्राह्मणों को भोजन कराना पड़ता है। पर जो बहुत ही असमर्थ हैं अथवा गृहस्थ नहीं हैं, उनको इन सब हवन, तर्पण आदि के स्थान पर नियत मात्रा में जप ही कर लेना चाहिये। जप की नियत मात्रा का उल्लेख अन्य लेख में आ चुका है।

उपर्युक्त रीति से मन्त्रजप करनेवाला अगर दीर्घायु की कामना रखता हो तो उसे गंगादि पवित्र नदियों के किनारे पञ्चाक्षर मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये। तथा दूर्वा के अंकुर, तिल और गुडूची(गिलोय) का दस हजार हवन करना चाहिये। अपमृत्यु निवारण के लिये शनिवार को अश्वत्थ-वृक्ष का स्पर्श करे और जप करे। व्याधि दूर करने के लिये एकाग्रचित हो एक लाख जप करे और नित्य आक की समिधा से 108 हवन करे। उदर-रोग के शान्त्यर्थ पाँच लाख मन्त्र का जप करके दस हजार हवन करे तथा नित्य सूर्य के सम्मुख पवित्र जल को 108 बार अभिमन्त्रित करके पान करे। मोक्षकामी निष्कामभाव से निरन्तर प्रेमपूर्वक जप करे।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि इस मन्त्र का किसी कारणवश उपर्युक्त रीति के पालनपूर्वक जप न भी हो सके तो भी इस मन्त्र का फल होता है। मूल बात है निष्ठापूर्वक जप। इस मन्त्र

के अधिकारी सभी लोग हैं; सभी मानवजाति इस मन्त्र की अधिकारिणी है। इसीलिये स्कंदपुराण में कहा गया है कि-

स्त्रीभिः शूद्रैश्च संकीर्णैर्धार्यते मुक्तिकांक्षिभिः।।
नास्य दीक्षा न होमश्च न संस्कारो न तर्पणम्।
न कालो नोपदेशश्च सदा शुचिरयं मनुः।।

(स्कन्दपुराण ब्राह्मखण्ड, ब्राह्मोत्तरखण्ड 1/20-21)

अर्थात् इस मन्त्र के अधिकारी सभी हैं। मोक्ष की इच्छा रखनेवाले स्त्री, शूद्र, अन्त्यज, वर्णसंकर तथा यवन भी इस मन्त्र को धारण कर सकते हैं। इस मन्त्र के लिये दीक्षा, होम, संस्कार, तर्पण, समय-शुद्धि तथा गुरुमुख से उपदेश आदि की अनिवार्यता नहीं है। यह मन्त्र सदा पवित्र रहता है।

पुनः इस मन्त्र की विशेषता यह है कि शिव-पूजन में यदि आवाहन, आचमन, स्नान, भस्मसमर्पण आदि किसी उपचार से संबंधित मन्त्र न आते हों तो ये सारी क्रियाएँ इसके द्वारा की जा सकती हैं।

(उपर्युक्त लेख मुख्यतः 'अनुष्ठानप्रकाशः' जो चतुर्थीलाल शर्मा द्वारा लिखित एवं वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई द्वारा संवत् 2008 में प्रकाशित है, तथा 'आचारेन्दुः जो 1909 में आनंदाश्रम से प्रकाशित है, पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀

स्नान का महत्त्व

ब्रह्माजी नारद से कहते हैं कि बिना स्नान के जो पुण्यमय शुभकर्म किया जाता है, वह निष्फल होता है, उसे राक्षस ग्रहण कर लेते हैं। स्नान से मनुष्य सत्य को पाता है। स्नान सनातन धर्म है, धर्म से मोक्षरूप फल पाकर मनुष्य फिर दुःखी नहीं होता।

स्नानेन सत्यमाप्नोति स्नानं धर्मः सनातनः।
धर्मान्मोक्षफलं प्राप्य पुनर्नैवावसीदति।।

(संक्षिप्त स्कन्दपु. गीताप्रेस, ब्राह्मख. चातुर्मास्य-माहात्म्य 1/25 पृ. 488 से उद्धृत)